International Journal of Applied Research 2015; 1(6): 154-155

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 3.4
IJAR 2015; 1(6): 154-155
www.allresearchjournal.com
Received: 29-03-2015
Accepted: 28-04-2015

डॉ० बी.के. गर्ग
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग हिन्दू कॉलेज,
सोनीपत (हरियाणा)

Correspondence:
डॉ० बी.के. गर्ग
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग हिन्दू कॉलेज,
सोनीपत (हरियाणा)

आधुनिक हिन्दी कविता में मुखरित समाज (दुष्यंत कुमार 'साये में धूप' के संदर्भ में)

डॉ० बी.के. गर्ग

'आधुनिक हिन्दी कविता में मुखरित समाज' जैसा विषय स्वयं में कुछ ऐसे शब्दों को समेटे हुए है, जिनकी स्पष्टता अपेक्षित है। सबसे पहले आधुनिकता को लें, यह शब्द आधुनिकता दिखने में, सामान्य प्रयोग में, जितना सरल एवं सहज लगता है, उतना सरल है नहीं।

- क्या विज्ञान के विकास से पैदा हुए सुविधाजनक संसाधनों के प्रयोग से आदमी की सोच में आए परिवर्तनों की अभिव्यक्ति आधुनिकता है?
- क्या परम्परा को गाली देकर, धकियानूसी बतलाकर उससे पल्ला झाड़ना आधुनिकता है?
- क्या टी–शर्ट और जीन्स पहनकर अंग्रेजी मिली जुली हिन्दी बोलना आधुनिकता है?

इस संबंध में मैं 1978 में पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ के हिन्दी विभाग द्वारा प्रकाशित 'परिशोध' पत्रिका के लेख का हवाला देना चाहूँ, जिसके लेखक–डॉ. सियाराम तिवारी ने अपने लेख 'परम्परा और आधुनिकता–एक दृष्टिकोण' में कहा है :–

परम्परा और आधुनिकता दोनों सनातन भाव हैं। जैसे व्यक्ति दोनों पैर एक साथ नहीं उठाता। एक पैर स्थिर रखकर दूसरा पैर आगे बढ़ाता है। स्थिरता और गतिशीलता का यह क्रम बदलता रहता है। स्थिर पग परम्परा है और बढ़ा हुआ चरण आधुनिकता है इसी प्रकार कल की आधुनिकता आज की परम्परा है और आज की आधुनिकता कल परम्परा बनेगी।

यहाँ आधुनिकता और समसामयिकता में अंतर करना आवश्यक है। हर रचनाकार पर समकालीन/तत्कालीन गतिविधियों, परिस्थितियों का जो प्रभाव पड़ता है, वह समसामयिकता है। इसलिए अधिकांश रचनाकार, कवि समसामयिक होते हैं परंतु आधुनिक विरले ही होते हैं। समसामयिकता का संबंध वर्तमान से होता है, जबकि आधुनिकता का भविष्य से। इसलिए कोई विरला, चेतना सम्पन्न कलाकार ही परम्परा की गोद में बैठकर भी भविष्य की आहट सुनने में सक्षम होता है।

अब प्रश्न उठता है, ऐसा विरला कौन? ऐसे विरले कलाकारों को उंगलियों पर गिना जा सकता है, ऐसे कवियों की भीड़ नहीं होती।

भक्तिकाल के कालखण्ड में आए कवि 'कृपाराम' उन विरलों में एक है जिन्होंने 'हिततरंगिनी' लिखकर एक शताब्दी पूर्व उस श्रृंगारिक रीतिकाल के दर्शन करवा दिए, जो राजदरबारों में बैठकर लिखा गया था। ऐसा ही काम नन्ददास की 'रसमंजरी' ने किया। द्विवेदीयुगीन श्रीधर पाठक, मुकुटधर पाण्डेय भी ऐसे विरले कवि हैं जिन्होंने द्विवेदी युग में ही छायावाद की दस्तक दे दी थी। इसी कड़ी में एक नाम सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का भी है, जिन्होंने छायावाद में 'कुकुरमुत्ता' जैसी रचना से आगामी प्रगतिवाद और नयी कविता की खनक दे दी थी।

यहाँ यह मैं स्पष्ट कर दूँ कि अपनी अतिशय संवेदना एवं भाषागत नवीन प्रयोगों के कारण यह आधुनिकता अन्य विधाओं की अपेक्षा कविता में अधिक होती है।

अब थोड़ी चर्चा सामाजिक सरोकार की कर ली जाए। साहित्य के उद्देश्य की चर्चा करते हुए मुंशी प्रेमचंद ने कहा है–'साहित्य की गोद में उन्हें आश्रय मिलना चाहिए जो निराश्रय हैं, जो पतित है, जो अनादृत है।'

अंग्रेजी साहित्य में शेक्सपियर के बाद सबसे चर्चित नाटककार, कवि, उपन्यासकार ऑस्कर वाइल्ड (Oscar Wilde) ने कहा–

Literature always anticipates life. It does not copy it. But moulds it to its purpose.

बिल गेट्स ने 67 बिलियन की अपनी सम्पत्ति में से 28 बिलियन, मार्क जकरवर्ग ने 13 बिलियन की सम्पति में से 5 बिलियन, अजीम प्रेम जी ने 61000 करोड़ में से 21000 करोड़, सुनील मित्तल ने 37400 करोड़ में से 200 करोड़ दान कर दिए, सामाजिक दायित्वों के प्रति अपने कर्तव्य पालन हेतु जन कल्याणकारी योजनाओं में खर्च किए। अब प्रश्न उठता है कि जब उद्योग समाज के वंचित और जरूरतमंद के साथ खड़ा है तो संवेदनशील रचनाकार क्यों नहीं? जी हाँ, हिन्दी में बहुत बड़ी संख्या

ऐसे संवेदनशील रचनाकारों की है, जो अपनी लेखनी से अर्थ उगाने की अपेक्षा जन भावनाओं और उनकी आकांक्षाओं को व्यक्त करना अधिक श्रेयस्कर मानते रहे हैं।

ऐसे कवियों में कालक्रम की दृष्टि से अति आधुनिक कहे जाने वाले दुष्यंत कुमार (1931–1975) प्रमुख से उभरकर सामने आते हैं। विशेषतः 'साये में धूप' में। इन्होंने अपनी ग़ज़लों की पुस्तक 'साये में धूप' में समाज की वह तस्वीर पेश की है, जिसे देख ऐसा लगता है कि दुष्यंत नहीं, एक आम भारतीय आदमी अपना दिल खोलकर दिखा रहा है, अपने जज्बात बयां कर रहा है।

सत्ता का मोह, सत्ता के लिए तिकड़मबाजी, गरीबी, मंहगाई, बेरोजगारी, आम आदमी का दुःख, बीसवीं शताब्दी का सातवां दशक इन सबका साक्षी था। सदियों से स्वतंत्रता की लड़ाई में जूझने वाला भारतीय, आज़ादी मिलने के बाद भी ठगा सा है, वह भी अपनों के हाथों, उसके सारे सपने मोह भंग की भेंट चढ़ गए।

मौत ने तो धर दबोचा एक चीते की तरह।
जिन्दगी ने जब छुआ, तब फासला रखकर छुआ।

यह दुःखी आदमी समाचार पत्रों में दिखाये गए सपनों और दीवारों पर लिखे झूठे नारों से उकता चुका है। दुष्यंत उस बिके हुए मीडिया की ओर संकेत करते है, जो सत्ता के लोगों को खुश करने के लिए गलत प्रचार करने में मशगूल था।

'रोज अखबारों में पढ़कर यह ख्याल आया हमें।
इस तरफ आती तो हम भी देखते फसले बहार'।।
आज सड़कों पर लिखे हैं सैकड़ों नारे न देख।
घर अंधेरा देख तू आकाश के तारे न देख।।

शायर आत्मविश्लेषण करते हुए बेईमान सत्ताधारियों को चुनने में स्वयं को भी दोषी मानता है–

किससे कहें कि छत की मुंडेरों से गिर पड़े।
हमने ही खुद पतंग उडाई थी शौकिया।

आपातकाल के पश्चात आने वाले बदलाव, लोकनायक जयप्रकाश का एक उगते सूर्य के रूप में वर्णन कवि के साहस और सत्ता को खुली चुनौती का उद्घोष है–

एक बूढ़ा आदमी है मुल्क में या यूँ कहो
इस अंधेरी कोठरी में एक रोशनदान है।

विवेचित गज़लकार सत्ता की ताकत से बेखौफ, किसी भी प्रकार के पुरस्कार पाने के लोभ से दूर रहकर सच्चे और आम आदमी के साथ खड़े होने का संकल्प लेता है–

मुझमें रहते हैं करोड़ों लोग, चुप कैसे रहूँ।
हर गज़ल अब सल्तनत के, नाम इक बयान है।।

अंत में बस यही कहना चाहूँगा कि किसी भी युग में कवि चाहे नारी की बात करें, गरीबी की चर्चा करें, बेईमान सत्ताधारियों की खबर ले, दलित की बात करें, जातिवाद या साम्प्रदायिकता पर प्रहार करे उसकी कलम समाज सापेक्ष ही होगी। मैं तो यहाँ तक भी मानता हूँ कि कवि यदि स्वस्थ श्रृंगार पर भी कुछ लिखता है, तो वह हमारे युवाओं के कल्याण और उन्हें दिशा प्रदान करने वाला ही सिद्ध होता है। कवि की निजता में भी समष्टि छिपी रहती है। महादेवी वर्मा का 'घीसा' संस्मरण क्या समष्टि की संवेदनाओं को जागृत नहीं करवाता। अतः 'साये में धूप' समाज के मुखरित रूप का प्रामाणिक दस्तावेज है।

संदर्भ

1. दुष्यंत कुमार 'साये में धूप'
2. 'परिशोध' – पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
3. 'प्रगतिशील लेखक संघ में दिया अभिभाषण'–मुंशी प्रेमचंद
4. Economic Timess